International Journal of Applied Research 2018; 4(9): 114-115

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(9): 114-115
www.allresearchjournal.com
Received: 12-07-2018
Accepted: 19-08-2018

Dr. Vishal Kr Sharma
Head, Department of History,
Hindu College, Sonipat,
Haryana, India

Correspondence
Dr. Vishal Kr Sharma
Head, Department of History,
Hindu College, Sonipat,
Haryana, India

मध्यकालीन हरियाणा के संत गरीबदास (16वीं से 18वीं सदी)

Dr. Vishal Kr Sharma

प्रस्तावना

मध्यकालीन भारत में 16वीं से 18वीं सदी में अनेक संत कवियों ने नवीन सामाजिक परिस्थितियों, विचारों और संस्थाओं के साथ स्पष्ट और सांकेतिक दोनों प्रकार के संवाद स्थापित किए। इस काल में भारत के हरियाणा राज्य में एक महान संत गरीब दास जी का जन्म हुआ।

संत गरीब दास (1717-1778) भक्ति व काव्य के लिए जाने जाते हैं। गरीब दास जी ने एक विशाल संग्रह की रचना की जो गरीबग्रंथ के नाम से प्रसिद्ध है। जिसे रत्नसागर भी कहते हैं। इन्होनें गरीबदासी नामक संप्रदाय की नींव रखी थी। स्वामी चेतना दास के अनुसार इन्होनें 18500 से अधिक पदों की रचना की थी। ग्रन्थ साहिब पुस्तक में कबीर के पद लिए गए थे और स्वयं गरीब दास ने रचे थे। गरीब दास का दर्शन था कि राम में और रहीम में कोई अन्तर नहीं है।

संत गरीब दास जी के जीवन का अधिकांश विवरण लेखक भेलराम बेनीवाल; 2008 की पुस्तक–जाट योद्धाओं का इतिहास से लिया गया है। इतिहासकार भेलराम बेनीवाल के अनुसार गरीब दास महाराज का जन्म वै" ाख पूर्णिमा के दिन संवत् 1774 को चौधरी बलराम धनखड़ के यहां हुआ था। इनकी माता का नाम रानी था। इनके पिता श्री बलराम धनखड़ अपने ससुर शिवपाल के कहने पर अपना गांव करौंथा छोड़कर गांव छुड़ानी में घर जमाई बनकर रहने लगे। वहीं छुड़ानी में गरीब दास का जन्म हुआ।

गरीब दास को बचपन से ही वैराग्य हो गया था। ईश्वर भक्ति, स्पष्टवादिता और निर्भीकता के लिए वे बाल्यकाल से ही प्रसिद्ध थे। संत गरीब दास का विवाह नाहर सिंह दहिया, गांव बरौना जिला सोनीपत की पुत्री देवी से हुआ था।

बिलकुल ठीक श्री पुज्य पाद प्रातः स्मरणीय सतगुरू कबीर जी महाराज की तरह गरीब दास जी महाराज का गृहस्थ जीवन भी बड़ा ही खुशहाल था। गरीब दास जी के गृहस्थ जीवन ने कभी उनके धार्मिक जीवन में अड़चन नहीं दी। गरीब दास जी महाराज के चार पुत्र व दो पुत्रियां प्राप्त हुई। पुत्र– पहले जैतराम जी, दूसरे तुरती राम जी, तीसरे अंगदराम जी, चौथे आसाराम जी, पुत्रियां– दिलकौर व ज्ञानकौर। जैतराम जी व तुरतीराम दोनों जुड़वां हुए, जैतराम पहले हुए होने के कारण उनको श्रेश्ठ माना गया। जैतराम जी पहले गृहस्थ रहे और पुत्र होने के पश्चात् सन्यास लेकर नागा साधुओं की तरह जीवन व्यतीत करने लगे। जैतराम जी ने जलंधर में अपना भारीर त्याग दिया था।

श्री ग्रन्थ साहिब की रचनाः

जनता को सत्य, अहिंसा, एकता, कि" वबंधुत्व का सदगुरू जी ने उपदेश दिया। सतगुंरू जी की वाणी में प्रेम व मधुरता का एसा आकर्शण था कि दूर–दूर से लोग उनके मधुर वचनों को सुनने के लिए आने लगे। इस प्रेममय वाणी से जनता प्रभावित होने लगी। आचार्य गरीब दास जी महाराज जन कल्याण के लिए अपने अनमोल रत्न अपने शिष्यो को सदुपदेश के रूप में देकर उनका कल्याण कर रहे थे। इस समय महाराज जी की ख्याति दूर–दूर तक फैल चुकी थी। गरीब दास जी की वाणी इतनी रसीली थी कि जो एक बार महाराज जी के मुख से सुन लेता था। वह उस मनुष्य के कंठ से कभी नहीं उतरती थी। एक बार महाराज जी के बारे में सुनकर दादुजी सम्प्रदाय के महात्मा श्री गोपाल दास जी छुड़ानी धाम में महाराज जी के दर्शन के लिए आये और दर्शन के बाद गोपाल दास जी ने नि" चय किया कि कुछ समय और छुड़ानी धाम में महाराज जी के सानिध्य में रहा जाये। गुरू जी के मुख से वाणी सुनकर गोपाल दास जी समझ गये कि 'गरीब दास जी कोई साधारण मनुष्य नहीं हैं।' गंरू जी के मुख से अनमोल वचनों की धारा बह रही थी।

गेपाल दास जी ने महाराज जी से प्रार्थना की 'हे महाराज जी आपकी वाणी अमूल्य रत्नों के समान है इससे अनेक मानव जीवों का कल्याण हो सकता है, अगर आप अनुमति दें तो मैं इसे लिखना

चाहता हुं। ताकि आगे आने वाली पीढीयां भी आपकी वाणी का लाभ उठाकर इस भवसागर के पार जा पाएं।' गरीब दास जी ने गोपाल दास जी को इस बात के लिए अनुमति दे दी। आचार्य गरीब दास जी महाराज ने अपनी वाणी में भिन्न भाशाओं का प्रयोग किया है। आचार्य गरीब दास जी महाराज की वाणी बहुत ही रस भरी और सरल है जो इसे सुनता है वह अपने आप को इसके प्रति समर्पित होने से रोक नहीं पाता। महाराज जी ने अपनी वाणी में हर तरह की भाशा का प्रयोग किया है। उन्होनें वाणी में हरयाणवी, पंजाबी, मरवाड़ी, बिहारी, उर्दु, फारसी, अरबी आदि अनेक प्रांतों की भाशा का प्रयोग किया है।

निर्वाण दिवस

61 वर्शों तक गरीब दास जी महाराज ने मानवता के लिए अदभुत कार्य किया असंख्य भटके हुए जीवों को संत के मार्ग पर चलाया। 61 वर्शों के पश्चात गरीब दास जी महाराज ने निर्णय किया कि 'अब इस ना" वर भारीर को त्याग कर अपने नीज लोक सतलोक को वापिस जाना चाहिए।' गरीब दास जी महाराज ने फाल्गुन की द्वादशाी 1835 की तिथि चुनी। जब यह बात महाराज जी के भक्तों के पता चली उन सभी में भाोक की लहर दौड़ गई। पुरे छुड़ानी धाम में उदासी छा गयी। तब सभी ािश्यों ने महाराज जी से प्रार्थना कि 'महाराज जी आप यंहा से न जाये अभी हमें आप के मार्गद" ान की बहुत जरुरत है।' तब महाराज जी ने उतर दिया किः

जैसे कटे ओस है, ऐसा योह संसार। धुप खिले पावे नहीं, गरीबदास परिवार।।

महाराज जी कहते हैं कि 'जैसे ओस की बूंद है जो धुप खिलने पर चमकती है और थोड़ी देर बाद वो बूंद गाायब हो जाती है वैसे ही यह संसार है जो कभी एक समान नहीं रहता, जैसे पवन का झोंका है आता है जाता है और दूसरे ही पल चला जाता है।' जो जन्मया सो आया मरण को।. जो चिन्या सो दहना रे।।

सन्दर्भ

1. भलेराम बेनीवाल, जाट योद्धाओं का इतिहास, 2008, पृ. 646–647
2. डा. महेन्द्र सिंह आर्य, धर्मपाल सिंह, कि" ान सिंह फौजदार, विजेन्द्र सिंह नरवाल, आधुनिक जाट इतिहास, आगरा, 1998, पृ. 81
3. श्री गरीब दास, हरियाणा संत ऑफ हुमन्टी, नई दिल्ली, आदित्य प्रका" ान, 2004, 216
4. एच. ए. रोज, ग्लोजरी ऑफ द टराइबस एण्ड कास्टस ऑफ पंजाब,
5. आई.बी.बी.इ.टी.एस.ओ.एन., मैक्लागन, 841